पुनीता सिंह

भूलने का नाटक करतीं औरतें

औरतें कुछ नहीं भूलती,
कितने जीवन में आए तूफान,
जब चेहरों से हटे मुखौटे,
दिल कितना हुआ हैरान।

भूलने की आदत तो पड़ गई,
और बहुत बार
उठाये अपने ही हाथों से
बड़े बड़े नुकसान।

भूल गई देकर किसी को
कीमती सामान,
खो दी घर के मेन गेट की चाभी
हुई परेशान।।

भूल गई,
वकील ने अदालत में ,
सजा कम करने के लिए
झूठ बोलने के लिए ,
गवाही देने के लिए
भूल गई जो
रटवाया बयान ।

रूपयों से भरा पर्स,
बाज़ार में किसी
दूकान पर भूल गई।
गहनों की पोटली,
घर में ही सुरक्षा के लिए
छुपा कर कहीं रख दी
और भूल गई।
और भी जानें क्या -क्या
रोज़ाना छूट रहा है
भूला- बिसराया।

मगर लाख प्रयत्न किए
जो बातें, मन में चुभ गई।
साल दर साल रूह को
दीमक की तरह
खोखला करतीं रहीं,
कुरेद - कुरेद कर
नासूर बनातीं रहीं,
उन बातों को औरत
कभी नहीं भूली,
बस भूलने का
नाटक करती रही
इस तरह दूसरों की
ज़िंदगी में खुशियाँ
भारती रही,
और खुद भी खुश रहने का,
कुशल नायिका की तरह
सफल क़िरदार निभाती रहीं।

 ISSN:2583-8849